मुस्तफ़ाबाद में 'नौजवान भारत सभा' द्वारा तीन दिवसीय मेडिकल कैम्प

नौजवान भारत सभा (नौभास) द्वारा पूर्वी दिल्ली के करावल नगर के एक मज़दूर इलाक़े मुस्तफ़ाबाद में दिनांक 27, 28, 29 को मेडिकल कैम्प आयोजित किया गया जिसमें योग्य डॉक्टरों द्वारा लगभग 500 लोगों को मुफ़्त परामर्श, प्राथमिक जाँच-पड़ताल एवं ज़रूरत के मुताबिक़ दवाइयों का वितरण किया गया। जाँच के दौरान औरतों में ख़ून की कमी पाई गई। जिसका कारण उन्हें पर्याप्त भोजन न उपलब्ध हो पाना है। वहीं बच्चों में चमड़ी के रोग व एलर्जी के लक्षण ज़्यादा पाए गए। जोकि वहाँ साफ़-सफ़ाई की कमी की वजह से है। इसके अलावा विभिन्न पेशे में काम की ख़राब स्थितियों से सम्बन्धित बीमारियाँ थीं। जिन बीमारियों में गरदन दर्द, पीठ दर्द आदि बीमारियों के गम्भीर लक्षण पाए गए। वहीं पर साफ़ पानी न उपलब्ध होने के चलते भी पेट की बीमारियों के लक्षण पाए गए।

इसी कैम्प में एक पोस्टर प्रदर्शनी द्वारा लोगों को बीमारियों के कारणों और उसके जिम्मेदार व्यवस्था का परदाफ़ाश किया गया। जिसमें आज देश में स्वास्थ्य स्थितियों की तस्वीर पेश की गई कि देश में भूख, कुपोषण व ग़रीबी के चलते लोग बीमारी व रोग से ग्रस्त हैं। काम के ज़्यादा घण्टे, कम आराम और ख़राब काम की स्थितियों की मुख्य वजह है बीमारी और रोग की। कैम्प के दौरान लगातार नौभास के वॉलण्टियर लगातार मज़दूरों व आम मेहनतकश आबादी को बता रहे थे कि निःशुल्क चिकित्सा का अधिकार जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे उन्हें लड़कर लेना ही होगा।

(कार्यालय संवाददाता)

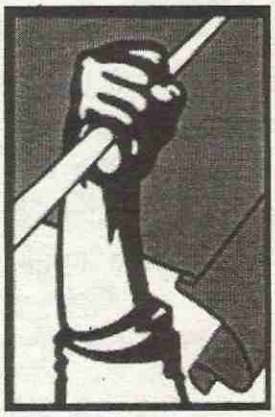

15 अगस्त को नक़ली और झूठी आज़ादी का भण्डाफोड़ अभियान

नौजवान भारत सभा द्वारा 15 अगस्त को नक़ली और झूठी आज़ादी का भण्डाफोड़ अभियान चलाया गया जिसमें लगभग 35 नौभास के कार्यकर्त्ता शामिल हुए। इसकी शुरुआत करावल नगर स्थित नौभास के कार्यालय से गगनभेदी नारों के साथ हुई। 'कैसी खुशियाँ, आज़ादी का कैसा शोर ! राज कर रहें हैं, कफ़नख़सोट-मुर्दाख़ोर!!', 'किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है! जनता यहाँ त्रस्त है, नेता मस्त है!!', 'नेताओं का बोलबाला, जनता का पिट रहा दिवाला!', 'पूँजीपतियों से यारी है! जनता से ग़द्दारी है!!', '30 करोड़ हैं बेरोज़गार, कौन है इसका ज़िम्मेदार! टाटा बिड़ला की सरकार! सब हैं इसके ज़िम्मेदार!!', 'गाँव शहर में अलख जगाकर, विदेशी लूट मिटायेंगे! देसी कफ़नख़सोटों को भी लड़कर मार भगायेंगे! कसम शहीदों की भारत में लोकस्वराज बनायेंगे!!', 'ख़त्म करो पूँजी का राज, लड़ो बनाओ लोकस्वराज!', आदि नारे लगाये गये। साइकिलों पर सवार कार्यकर्त्ताओं ने साइकिल के आगे इन्क़लाबी नारों और पूँजीवादी व्यवस्था के भण्डाफोड़ नारों की तख़्तियाँ लगाई हुई थी तथा जोशो-ख़रोश के साथ 'आँधी आये या तूफ़ान, डटे रहेंगे नौजवान' के नारे के साथ बरसात में ही अभियान की शुरुआत कर दी थी। निम्न मध्यवर्गीय इलाक़ों के साथ-साथ, मज़दूर इलाक़ों में जगह-जगह लोकस्वराज का पर्चा बाँटते हुए लोगों से नयी आज़ादी की लड़ाई के लिए उठ खड़े होने आह्वान किया गया। जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं की शुरुआत में गगनभेदी नारों और स्काउट ताली के साथ लोगों को गोल घेरे के इर्दगिर्द इकट्ठा किया गया। कार्यकर्त्ताओं ने क्रान्तिकारी गीत 'तोड़ो बन्धन तोड़ो' के साथ शुरुआत की, बारी-बारी से कार्यकर्त्ताओं ने इकट्ठा हुए समूह को 1947 में मिली तथाकथित आज़ादी की असलियत का परदाफ़ाश करते हुए बताया कि 63 साल पहले मिली आज़ादी का फ़ायदा सिर्फ़ 15 फ़ीसदी पूँजीपतियों और उनके टुकड़खोर, परजीवी, भ्रष्ट नेता-मन्त्री, नौकरशाह, पुलिस-फ़ौज के अफ़सरान, ठेकेदारों, दलालों, सट्टेबाज़ों, डॉक्टरों-इंजीनियरों-प्रोफ़ेसरों, अख़बार-टी.वी. के ऊँचे पदों वाले लोगों आदि को मिला और दूसरी तरफ़ देश की 84 करोड़ (77 फ़ीसदी आबादी) जिसमें मेहनत-मजूरी करके जीने वालों की साठ करोड़ आबादी शामिल है वह सिर्फ़ 20 रुपये या इससे भी कम आय पर गुज़ारा करती हुए भूख, कुपोषण, बीमारी, भयानक दरिद्रता की शिकार है। इसका वास्तविक हल एक मज़दूर क्रान्ति द्वारा ही असली आज़ादी और लोकतन्त्र की स्थापना सम्भव है। इसके लिए लोगों को एक बार फिर से

संगठित होने और संघर्ष करने का आह्वान किया गया। और लोगों से कहा गया कि हर गाँव-शहर में, बस्ती और मोहल्ले में संगठन, क्रान्तिकारी मज़दूर-ग़रीब किसानों की यूनियनें, नौजवानों-छात्रों के साथ महिलाओं और आम नागरिकों के भी जनसंगठनों एक ताना-बाना खड़ा करना होगा और एक फ़ैसलाकुन लड़ाई के लिए आगे आना होगा। यही एकमात्र रास्ता हमारे सामने है और हमारे ज़िन्दा होने का सबूत भी। सफ़र यदि हज़ार मील लम्बा हो तो भी शुरुआत तो एक क़दम उठाकर ही की जाती है। इसी बात का आह्वान करते हुए लोगों के बीच क्रान्तिकारी लोकस्वराज का पर्चा बाँटा गया और लोगों से ऐसे अभियानों को दूरदराज तक पहुँचाने के लिए चादर फैलाकर सहयोग भी जुटाया गया। कार्यकर्त्ताओं ने लोगों को बताया कि जनता की लड़ाई, जनता के दम पर लड़ी जा सकती है, न कि टाटा-बिड़ला के सहारे और न ही भ्रष्ट नेता-मन्त्री और अफ़सरों के पैसे के दम पर।

9 अगस्त के मौक़े पर कार्यक्रम

9 अगस्त को 'नौजवान भारत सभा' द्वारा भगतसिंह कालोनी, करावल नगर, दिल्ली में अगस्त क्रान्ति को याद करते हुए पोस्टर प्रदर्शनी व जनसभा का आयोजन किया गया। सभा का आयोजन शाम 5:00 बजे भगत सिंह कॉलोनी के एक चौराहे पर किया गया। आयोजन स्थल पर नौजवान भारत सभा के कार्यकर्त्ता व कालोनी के नौजवानों ने जैसे ही क्रान्तिकारियों के पोस्टर लगाना शुरू किया वैसे ही नागरिकों, बच्चों की भीड़ जुटना शुरू हो गयी। आयोजन स्थल पर लगायी गयी पुस्तक प्रदर्शनी पर लोगों की भीड़ आकर कार्यक्रम के बारे में उत्सुकता से बात कर रही थी। नौभास की दूसरी टोली आसपास की गलियों में ढपली और गीत तथा नारे के साथ कार्यक्रम की सूचना देने निकली जिसमें कॉलोनी के छात्रों और बच्चों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। प्रचार टोली 'अगस्त क्रान्ति के शहीद अमर रहें', 'शहीदों के सपनों को साकार करो' के नारे लगा रही थी। कार्यक्रम के दौरान पर्चा बाँटा गया। देर रात 9:00 बजे कार्यक्रम का समापन क्रान्तिकारी गीत 'आ रे नौजवान' से किया गया। कार्यक्रम में 9 अगस्त 1942 को शुरू हुई अगस्त क्रान्ति के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए नौभास के सदस्यों ने यह बताया कि किस प्रकार अंग्रेज़ी हुकूमत के शोषण से पिस रही भारतीय जनता ने एकजुट होकर संघर्ष का बिगुल फूँका। 'अंग्रेज़ो भारत छोड़ो' के नारे गाँव-गाँव बस्ती-बस्ती गूँज उठे थे। हजारों नौजवानों ने देश की आज़ादी की ख़ातिर अपनी जानें गँवाई थी। इस आन्दोलन को व्यापक मज़दूर और किसान आबादी का सहयोग प्राप्त था। 1942 के क्रान्तिकारी संघर्ष ने भारत की राजनीतिक आज़ादी की प्राप्ति को, भारत की धरती पर अंग्रेज़ी साम्राज्य के सूर्यास्त के भविष्य को पूरी तरह सुनिश्चित कर दिया। 9 अगस्त हमारी क्रान्तिकारी विरासत है। यह नौजवानों का क्रान्तिकारी त्योहार है। यह आज़ादी की लड़ाई और साथ की नौजवान आन्दोलन के इतिहास का, वीरता की गाथाओं से भरा और शहादतों के लहू से रँगा एक पन्ना है।

नौभास के योगेश ने कहा कि आज के समय में सरकार तथा पूँजीपति वर्ग जनता का शोषण कर रहे हैं। खाने-पीने के सामानों से लेकर शिक्षा, चिकित्सा आम आदमी के लिए दूभर होती जा रही है। ऐसे समय में लोगों को चुनावी नौटंकी और धर्म, जाति व समुदाय की गलाजतभरी राजनीति करनेवालों के इरादों को समझना होगा। उससे बाहर आना होगा। नागरिकों को कॉलोनी के साफ़-सफ़ाई, बिजली-पानी की समस्याओं को लेकर एकजुट संघर्ष करना होगा। छात्रों-नौजवानों को शिक्षा और रोज़गार के लिए लड़ना होगा, अपने संगठन बनाने होंगे। इस तरह पूरे देश में मेहनतकश, छात्रों-नौजवानों व नागरिक संगठनों का जाल बिछाना होगा। अगस्त क्रान्ति जनता का दमन व शोषण के विरूद्ध एकजुट संघर्ष की मिसाल है। आज के समय में भारत की मेहनतकश जनता को अपनी मुक्ति के लिए 'अगस्त क्रान्ति' को एक मार्गदर्शक के रूप में याद करना ही 'अगस्त क्रान्ति' के शहीदों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(कार्यालय संवाददाता)

सम्पत्ति ने मनुष्य को क्रीतदास बना लिया है। उसकी सारी मानसिक, आत्मिक और दैहिक शक्ति केवल सम्पत्ति के संचय में बीत जाती है। मरते दम तक भी हमें यही हसरत रहती है कि हाय, इस सम्पत्ति का क्या हाल होगा। हम सम्पत्ति के लिए जीते हैं, उसी के लिए मरते हैं। हम विद्वान बनते हैं सम्पत्ति के लिए, गेरुए वस्त्र धारण करते हैं सम्पत्ति के लिए। घी में आलू मिलाकर हम क्यों बेचते हैं? दूध में पानी क्यों मिलाते हैं? भाँति-भाँति के वैज्ञानिक हिंसा-यंत्र क्यों बनाते हैं? वेश्याएँ क्यों बनती हैं, और डाके क्यों पड़ते हैं? इसका एकमात्र कारण सम्पत्ति है। जब तक सम्पत्तिहीन समाज का संगठन नहीं होगा, जब तक सम्पत्ति व्यक्तिवाद का अन्त न होगा, संसार को शान्ति न मिलेगी।

– प्रेमचन्द ('राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता' लेख से)